# मेमनों की असहिष्णुता

**भेड़ियों को शिकायत है**
**मेमने बहुत असहिष्णु हो गये हैं**
**वे अपनी नरम-नरम गरदनों में**
**भेड़ियों को नूकीले दांत**
**नहीं घुसाने देते**
**भेड़ियों को देखते ही**
**वे शोर मचाते है**
**और तो और**
**वे भेड़ियों का इतिहास खोज कर लाते हैं**
**और बताते हैं कि**
**भेड़िये हमेशा से मेमनों के गले में**
**दांत गड़ाते रहते हैं**
**और इसे प्राकृतिक नियम**
**घोषित करते रहे हैं**
**उन्होंने शास्त्रों में लिख रखा है**
**प्राकृतिक नियम को मानना सहिष्णुता है**
**अब वे कह रहे हैं**
**इसे न मानना असहिष्णुता**
**मेमनों ने पीढ़ी-दर-पीढी**
**भेड़ियों की सहिष्णुता देखी है**
**उन्होंने देखा है**
**अपनी मांगों को**
**भेड़ियों का शिकार होते**
**उन्होंने देखा है**
**हर पवित्र अनुष्ठान में**
**अपनी बलि चढते**
**उन्होंने देखा है**
**हर कुकर्म में खुद को जिबह होते**
**उन्होंने अपने खून की धार देखी है**
**और देखा है भेड़ियों को**
**गरम-गरम खून का स्वाद लेते**
**जब वे धरम-करम की चर्चा करते थे**
**मेमनों को पता है**
**भेड़ियों के लिये**
**सहिष्णुता का मतलब है**
**सनातन धरम**
**मेमनों के खून-मांस पर सनातनी अधिकार**
**वे दिल मानते हैं कि**
**यही होना चाहिये**
**क्योंकि यही होता रहा है**
**पर दुनिया अगर भेड़ियों के हिसाब से चलती**
**तो वह अमीबा से आगे नहीं बढ़ पाती**
**तब भेड़िये भी नहीं होते**
**दुनिया भेड़ियों के हिसाब से नहीं चलती**
**वह सनातन धरम से नहीं चलती**
**वह चलती है**
**क्योंकि मेमने भेड़ियों के खिलाफ़**
**असहिष्णु हो जाते हैं**
**वे अपनी असहिष्णुता से**
**सहिष्णु भेड़ियों के दांत तोड़ सकते हैं**
**वे उन्हें उनकी मांद में खदेड़ कर**
**उनमें धुंआ भर देते हैं**
**भेड़िये गुर्राते हैं**
**चीखते-चिल्लाते है**
**पर अंत में दम तोड़ देते हैं**

**-अनिकेत की कविता**

# सहिष्णुता के अहंकार में डूबा समाज

## आमिर खान के बयान पर छिड़ा विवाद

**विद्याभूषण रावत**

आमिर खान की पत्नी के 'विदेश में बसने की खबर' से हर 'भारतीय' सदमे में है और उनको शाहरूख खान के साथ पाकिस्तान भेजने की बात कह रहे हैं। आमिर के पुतले जलाए जा रहे हैंऔर देश की विभिन्न अदालतों में उनके ख़िलाफ़ मुकदमे किए गए हैं जिनमें देशद्रोह का मुकदमा भी शामिल है। सबसे मजेदार बात यह है कि विदेशों में रहने वाले भारतीय इस अभियान को बहुत हवा दे रहे हैं. वैसे भारत में रहने वाले लोग भी कह रहे हैं कि आमिर ने गद्दारी की है और उनको इसके परिणाम भुगतने के लिये तैयार रहना चाहिये। है न कितनी अच्छी बात कि हम पश्चिमी लोकतान्त्रिक देशों में रहकर पूरे अधिकार के साथ भारत माता की जय बोलना चाहते हैं, मंदिर बनाना चाहते हैं, मोदी की बड़ी-बड़ी रैलियां करना चाहते हैं लेकिन अपने देश में हम पूरी दबंगई दिखाना चाहते हैं। अगर यही बात अमिताभ करते तो क्या उन्हें कहीं भेजने की बात होती?

हम फ़िल्मी कलाकारों को भगवान बना कर न देखें। व्यक्तिगत तौर पर मैं आमिर खान को ढकोसलेबाज़ मानता हूं क्योंकि उनकी सत्य की जीत 'रिलायंस' के चंदे से होती है और भारत में अगर हम भ्रष्टाचार को लेकर लालू को इतना गरियाते हैं तो अम्बानी तो उस बीमारी के जनक थे। क्या अर्नब गोस्वामी जैसे भारत में 'ईमानदारी' का राग अलापने वाले मसीहा लोग अम्बानी और अडानी के बारे में बात करेंगे? जब करप्शन की बात हो तो राजनेताओं का ही हिसाब-किताब क्यों हो, उद्योगपतियों का क्यों नहीं, क्योंकि भ्रष्टाचार की गंगा उनकी ही दुकानों से निकलती है। इसलिए आमिर ने जो कहा वह बहुत सोच-विचार, रिहर्सल के बाद कहा और वह उनका व्यू पाइंट है और उसे रखने की उनको छूट होनी चाहिए। उनको पाकिस्तान भेजने और उनको गाली देकर हिंदुत्व के लठैत आमिर की ही बात को सही साबित कर रहे हैं।

हालांकि, मैं आमिर की बातों से कतई इत्तेफ़ाक नहीं रखता। सबसे पहले तो आमिर की यह बात गलत है कि भारत में असहिष्णुता अचानक बढ़ गई। हमारा देश असल में असभ्य और क्रूर है, जहां दहेज के लिये लड़कियां रोज जलती हैं, जहां प्रेम विवाह करने पर मां-बाप अपने ही बच्चों की निर्ममता से हत्या करने से नहीं घबराते, जहां किसी भी लड़की का शाम को घर से बाहर निकलना मुश्किल होता है। जहां सती का आज भी महिमामंडन होता हो और विधवा होने पर औरतों की जिंदगी नरक बना दी जाती हो, जहां आज भी मंदिरों में दलितों के प्रवेश पर उनकी हत्या कर दी जाती हो, जहां किसी के घर में क्या बन रहा है, उस पर समाज नियंत्रण करना चाहता हो, जहां सकूलों से बच्चे इसलिए निकल कर चले जाते हों कि खाना किसी दलित महिला या विधवा ने बनाया है, उस देश की महानता और संस्कृति का क्या कहें, जहां एक समाज को पढने का हक़ नहीं और दूसरे को केवल मलमूत्र उठाने की जिम्मेवारी दी गई हो, जिसके छूने भर से लोग अछूत हो जाएं! लेकिन भारत की महान सभ्यता का ढोंग करने वालों का ध्यान इधर कभी नहीं गया। ऐसा नहीं कि इस विषय में लिखा नहीं गया हो या बात नहीं की गई हो।

असहिष्णुता का इतिहास लिखें तो शर्म आएगी, तब आमिरखान से क्यों इतनी नाराजगी है? मतलब साफ़ है। भारत के इलीट मुस्लिम सेकुलरिज्म के खेल में भारत की सहिष्णुता के सबसे बड़े 'ब्रांड' एम्बेसडर हैं। और जो व्यक्ति 'अतुलनीय भारत' की नौटंकी करता रहा हो वह अचानक पाला क्यों बदल बैठा! आमिर खान और अन्य कलाकारों ने भारत के 'सहिष्णु' होने के सबूत दिए और साथ ही दलितों या पसमांदा मुसलमानों की हालतों पर चुप रहकर उन्होंने हमेशा ही 'सहिष्णु' परम्परा का 'सम्मान' किया है। शायद रईसी परम्परा में केवल बड़े-बड़े लोगों की बड़ी-बड़ी बातें सेकुलरिज्म होती हैं लेकिन हलालखोर, कलण्डर, नट या हेला भी कोई कौम है, इसका शायद इन्हें पता भी नहीं होगा। हमें पता है कि अभी तक मैला ढोने की प्रथा के विरुद्ध आमिर ने कभी निर्णायक बात नहीं की, वह केवल टीवी शो में आंसू बहाने तक सीमित थी।

तो फ़िर क्या बदला? लोग कहते हैं कि कांग्रेस के जमाने में भी सेंसरशिप लगी और फ़िल्में प्रतिबंधित हुईं। बिलकुल सही बात है। हम इमरजेंसी के विरुद्ध खड़े हुए लेकिन अब ऐसा लगता है कि सत्तारूढ दल का मुख्य आदर्श संजय गांधी और चीखने-चिल्लाने वाले मुल्ले हैं जो किसी भी उदार विचार को या उनसे विपरीत विचार को डंडे और धमका-डरा के रुकवाना चाहते हैं। फ़िल्मी लोग़ों को उतनी ही तवज्जो मिलनी चाहिए जिसके वे हकदार हैं। पिछले कुछ वर्षो में बम्बइया फिल्मी लोग हिंदुत्व का एजेंडा लागू करने में सबसे प्रमुख रहे हैं और उनकी प्रसिद्ध ने चुनाव भी जितवाया है लेकिन उनमें कोई भी ऐसे नहीं हैं जो शाहरुख, आमिर या अमिताभ का दूर-दूर तक मुकाबला कर सके। अमिताभ हालांकि गुजरात या अन्य सरकारी विज्ञापनों में आते हैं लेकिन वे भी राजनैतिक हकीकतों से वाकिफ़ हैं, इसलिए चुप रहते हैं। हालांकि देर-सबेर उन्हें मुंह खोलना पड़ेगा। आज के हिन्दुत्व कारपोरेट के दौर में भारत की आक्रामक मार्केटिंग चल रही है इसलिए आमिर या शाहरुख जो वाकई में भारत के सवर्णों की 'शहनशीलता' के 'प्रतिक' हैं इसलिए उनसे ये 'उम्मीद' की जाती है कि वे डॉ. ए.पी.जे. कलाम की तरह अपने 'भारतीय' होने का सबूत दें। कोई मुसलमान यदि अपने दिल की बात रख दे तो वह 'देशद्रोही' है। जिन लोगों को सुनकर हम बड़े हुए उन साहिर, दिलीप कुमार, मोहम्मद रफ़ी, बेगम अख्तर को धर्म के दायरे में डाला जा रहा है क्योंकि वे अपनी एक राय रखते हैं। कई बार फ़िल्म स्टार, गायक व खिलाड़ी लोग वह बात कह देते हैं जो उनके कई प्रशंसकों को नहीं जंचती। उसमें कोई बुरी बात नहीं है। हम आमिर खान से साम्प्रदायिकता और सहिष्णुता का ज्ञान नहीं लेते, अपितु उनकी फ़िल्म इसलिए देखते हैं कि वह साफ़ सुथरी फ़िल्म बनाते हैं। क्या हम रवीना टंडन, अशोक पंडित, गजेन्द्र चौहान या मनोज तिवारी से ज्ञान लें? हां, फ़िल्मों में बहुत से लोग रहे हैं जिन्होंने गंभीर विषयों पर बोला है और उनकी समझ है। बाकी हमको कोई कलाकार इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि हमें उसकी एक्टिंग अच्छी लगती है या फ़िल्म अच्छी लगती है। अगर आप आमिर या शाहरुख की फ़िल्मों का बायकाट इसलिए करना चाहते हैं कि उनकी कोई बात आपको अच्छी नहीं लगी तो फ़ैसला आपका है क्योंकि फ़िर आपको मनोज तिवारी, अनुपम खेर, अशोक पंडित, गजेन्द्र चौहान आदि की फ़िल्में देखनी पड़ेंगी क्योंकि उनके विचार आपको अच्छे लगते हैं।

आमिर खान ने जो कहा वो उनका हक था और शायद देश का बहुत बड़ा तबका वैसा ही सोच रहा है। अपने दिल की बात को अगर वह कह दिए तो हमारा फ़र्ज है? उसको गालियों से लतियाएं या भरोसा दिलाएं? आमिर ने बस एक ही बात गलत कही कि असहिष्णुता बढ रही है, क्योंकि वह पहले से ही है। इस देश के लोगों ने उनको प्यार दिया है। जो लोग इस वक्त दबंगई कर रहे हैं वे हमें आपातकाल के संजय गांधी के गुंडों की याद दिला रहे हैं। आमिर को कहना चाहिए कि कौन लोग ऐसा तमाशा कर रहे हैं। ये पूरे देश के लोग नहीं हैं, ये एक पार्टी विशेष और जमात विशेष के लोग हैं जिन्होंने उन सभी को गरियाने और धमकाने का लाइसेंस लिया हुआ है जो इनकी विचारधारा से मेल नहीं खाते। इसलिए आमिर साहेब सबको न गरियाएं। साफ़ बोलिए वे कौन हैं जो असहिष्णुता फ़ैला रहे हैं। इमरजेन्सी का विरोध करने वालों का सबसे बड़ा मॉडल इमरजेंसी का दौर ही है और वही व्यक्तिवादी राजनीति आज हावी है। केवल फ़र्क इतना है कि उस दौर में दूरदर्शन और रेडियो पर समाचार सरकार सेंसर करती थी और आज सरकार और सरकारी पार्टी के दरबारी पत्रकार पूरी ताकत से ये काम कर रहे हैं। आज अर्नब गोस्वामी और सुधीर चौधरी का दौर है जिसमें सरकार से मतभेद रखने वालों की खबरें सेंसर ही नहीं होंगी बल्कि उनको अच्छे से गरियाया जायेगा। आखिर 9 बजे के प्राइम टाइम शोज का यही उद्देश्य है। हकीकत यह है कि हम वाकई में एक भयानक दौर से गुजर रहे हैं जिसमें तिलिस्मी राष्ट्रवादी नारों की गूंज में हमारे मानवाधिकारों और अन्य संवैधानिक अधिकारों की मांग की आवाजों को दबाया जा रहा है। पूंजीवादी ब्राह्मणवादी लोकतंत्र से आखिर आप उम्मीद भी क्या कर सकते हैं? वह तो संदेश वाहक को ही मारना चाहता है ताकि खबर ही न रहे और खबरें बनाने और बिगाड़ने के वर्तमान युग में मीडिया निपुण होता जा रहा है, जो बहुत ही शर्मनाक है।

## हाइड्रोजन बम का गोबर तोड़ !

नार्थ कोरिया ने हाइड्रोजन बम का परीक्षण किया है। घबराये हुए साउथ कोरिया ने एटॉमिक रेडियेशन रोकने के लिए भारतीय गोबर विशेषज्ञों से सम्पर्क किया है। यहां के दिव्य बुद्धि वाले विशेषज्ञों ने बतलाया है कि, गोबर में गौमूत्र और छाँछ मिलाकर उसमे तुलसी पत्ती डाल देने के बाद इस घोल से हाइड्रोजन बम के रेडियेशन का मुकाबला भी किया जा सकता है।

इतना ही नही इस घोल में अगर कनेर के पत्ते, धतूरे की जड़ और कबूतर की लेंडी मिलाकर शहर के चारों तरफ लक्ष्मण रेखा बना दो तो कोई टेंकर या तोप शहर में नही घुस सकती।

इसी तरह अगर इस घोल के कण्डे बनाकर उसमे सफेद गाय का घी और काले कौए की हगार डालकर उसे जला दिया जाए तो ये धुंआ आसमान के जितने हिस्से में फैलेगा उतने हिस्से में मिसाइल और लड़ाकू विमान घुस भी नही सकेंगे।

और सबसे बड़ी बात ये कि इस तकनीक को समझाने के लिए भारतीय गुरु ने साउथ कोरिया के रक्षा मंत्री से सिर्फ एक सौ ग्यारह रूपये लिए।

ये बातें अभी ओबामा ने सुनी तो उनकी आँख से आंसू निकल आये, कि इतनी गजब की और इतनी सस्ती टेक्नालॉजी भारत ने कैसे डेवलप कर ली। पुतिन अंकल चक्कर खा के गिर गए। चाइना भी हैरान है कि ये क्या हो गया। भारतवर्ष अचानक इतना आगे कैसे निकल गया?

लेकिन ये मूर्ख पाकिस्तान अकेला मुल्क है जो इस गोबर माहात्म्य को नजरन्दाज कर रहा है।

**. संजय जोठे**


## घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

**आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:**

**अन्य बिक्री केन्द्र :**

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**